डॉ. भारिल्ल का 2010 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 28वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	लन्दन	**Bhimji Bhai Shah 192-384-0833** **bhimji@hevika.com** **Jayanti Bhai (Gutka)** **0044-208 907 8257 (H)**	4 से 9 जून
2.	लास एंजिल्स	**Atul Khara 469-831-2163** **Naresh Palkhiwala (R) 562-404-1729** **(O) 626-814-8425 ext.8725** **naresh.palkhiwala@westcov.org**	11 से 17 जून
3.	मियामी	**Mahendra Shah (R) 305-595-3833** **(O) 305-371-2149** **E-mail : bhitap@bellsouth.net**	18 से 24 जून
4.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088** **Bipin Bhayani (O) 815-939-3190** **(R) 815-939-0056 (F) 815-939-3159**	25 से 30 जून
5.	फिलाडेल्फिया (शिविर)	**Atul Khara 469-831-2163** **972-424-4902 insty@verizon.net**	1 से 4 जुलाई
6.	सान् फ्रांसिस्को	**Ashok Sethi (R) 408-517-0975** **ashok_k_sethi@yahoo.com**	5 से 11 जुलाई
7.	डलास	**Atul Khara 469-831-2163** **972-424-4902 insty@verizon.net**	12 से 16 जुलाई

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली भी कुछ वर्षों से नियमित धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

9 से 12 जून - **ह्यूस्टन**, 13 से 18 जून - **डलास**, 19 से 25 जून - **सॉनफ्रांसिस्को**, 26 से 30 जून - **सॉनडियागो**, 1 से 4 जुलाई - **फिलाडेल्फिया (शिविर)**, 5 से 14 जुलाई - **मियामी**, 15 से 18 जुलाई - **न्यूयार्क**, 19 से 25 जुलाई - **शिकागो**।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 28 322 अंक : 10

जानत क्यों नहिं रे...

जानत क्यों नहिं रे, हे नर आतमज्ञानी ।। टेक।।
राग-द्वेष पुदगल की संपति, निश्चै शुद्ध निशानी।।
जानत क्यों नहिं रे... ।।1।।
जाय नरक पशु नर सुर गति में, यह परजाय बिरानी।
सिद्ध सरूप सदा अविनाशी, मानत बिरले प्रानी।।
जानत क्यों नहिं रे... ।।2।।
कियो न काहू हरै न कोई, गुरु-शिष कौन कहानी।
जनम-मरन मलरहित विमल है, कीच बिना जिम पानी।।
जानत क्यों नहिं रे... ।।3।।
सार पदारथ है तिहुँ जग में, नहिं क्रोधी नहिं मानी।
'दौलत' सो घट मांहि बिराजे, लखि हूजे शिवथानी।।
जानत क्यों नहिं रे...।।4।।

– कविवर पण्डित दौलतरामजी

छहढाला प्रवचन

गृहीत-मिथ्याज्ञान का स्वरूप और उसके त्याग का उपदेश

एकान्तवाद-दूषित समस्त, विषयादिक-पोषक अप्रशस्त।
कपिलादि रचित श्रुत कौ अभ्यास, सो है कुबोध बहु देन त्रास।।१३।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

जिनशास्त्र तो वीतराग-विज्ञान के ही पोषक हैं; परन्तु जिसके अभिप्राय में ही मिथ्यात्व हो और वह उसको छोड़ना न चाहे तो शास्त्र क्या करे ? जो जीव वीतरागी शास्त्रों को पढ़कर भी अपनी कुमति नहीं छोड़ता, उसका मिथ्यात्व नहीं मिटता; वास्तव में तो उसने शास्त्र पढ़े ही नहीं; क्योंकि शास्त्र का सच्चा वाच्यभाव उसने नहीं जाना। शास्त्र तो पर से भिन्न और अपने गुण-पर्यायों से अभिन्न ज्ञानस्वभाव को ही दिखाते हैं - ऐसा जानकर परभावों से भिन्न ज्ञान स्वभावरूप परिणत होना ही शास्त्र का सार है, धर्म है, मोक्षमार्ग है। उसके साथ होनेवाले व्यवहार-रागादि जानने योग्य तो हैं; पर आदरने योग्य नहीं है। आदरने योग्य अर्थात् अनुभव करने योग्य तो एक परमशुद्ध ज्ञायकभाव ही है; उसमें एकाग्र होनेवाले को रागरूप व्यवहार नहीं रहता; निर्मल पर्यायरूप आत्मव्यवहार होता है।

अहो ! जिनागम सर्वोत्कृष्ट परमभाव का अनुभव कराता है। 'रचना जिन-उपदेश की सर्वोत्कृष्ट तीनों काल।' सभी वीतरागी शास्त्र आत्मा में सन्मुखता कराते हैं, भूतार्थस्वभाव का अनुभव कराते हैं।

प्रत्येक वस्तु अस्ति-नास्ति, नित्य-अनित्य, एक-अनेक आदि अनन्त स्वभावों से युक्त है, इसे ही अनेकान्त कहते हैं। ऐसी अनेकान्तरूप वस्तु को सर्वथा क्षणिक मानना अथवा सर्वथा अपरिणामी मानना मिथ्यात्व है। वस्तु के सर्वांग अर्थात् सभी धर्मों को न मानकर एक अंग को ही सर्वथा पकड़कर मानने से वस्तु की सिद्धि नहीं होती। जिसप्रकार कोई अंधा मनुष्य हाथी की पूँछ, सूँड, कान, पैर आदि अनेक

अंगों में से किसी एक ही अंग को पकड़कर उसको ही हाथी मान ले तो उसने सच्चे हाथी को नहीं जाना; उसीप्रकार अज्ञानी अनन्त धर्मात्मक वस्तु को न जानकर नित्य-अनित्य आदि धर्मों में से किसी एक ही धर्म को पकड़कर उसरूप ही वस्तु को मान ले तो उसने सच्ची वस्तु को नहीं जाना।

वस्तु नित्यता के बिना टिक नहीं सकती और अनित्यता के बिना उसमें परिणमनरूप कार्य नहीं हो सकता; इसप्रकार अनेकान्त से ही वस्तु की सिद्धि है। अनेकान्त स्वरूप में गम्भीर रहस्य भरे हुए हैं; वह वस्तु के अनेक धर्मों को एकसाथ रखकर यथार्थ वस्तुस्वरूप को प्रसिद्ध करता है। वस्तुस्वरूप को प्रसिद्ध करे, वही सच्चा शास्त्र है तथा वस्तुस्वरूप को जाने वही सच्चा ज्ञान है।

जो शास्त्र विषय-कषाय के पोषक, युद्ध-हिंसा आदि के अनुमोदक, जीव को पराधीन कहनेवाले और राग या इन्द्रियज्ञान से धर्म बतानेवाले हों, वे सभी कुशास्त्र हैं। उनकी मान्यता से कुज्ञान की पुष्टि होती है।

कुशास्त्र कभी भी अतीन्द्रिय ज्ञानमय आत्मा का स्वरूप नहीं दिखा सकते; अतः वे अप्रशस्त हैं, बुरे हैं तथा सत्य सिद्धान्त से विरुद्ध होने से जीव का अत्यन्त अहित करनेवाले हैं; इसलिये अपना हित चाहनेवाले जीवों को उनका सेवन छोड़ देना चाहिए।

अहो ! सम्यग्ज्ञान की महिमा की लोगों को पहचान ही नहीं है। अधिकतर लोग तो अज्ञानपूर्वक धर्म के नाम पर राग को ही चारित्र समझकर मिथ्याचारित्र का सेवन कर रहे हैं; परन्तु सम्यग्ज्ञान के बिना सच्चा चारित्र कदापि नहीं होता और सम्यग्ज्ञान से रहित क्रियाएँ जीव को हितकर नहीं होतीं।

कौनसा शास्त्र सच्चा है और कौनसा मिथ्या ? - जिसे इसकी खबर नहीं है, जो शास्त्रों के अर्थ को नहीं समझता और अपनी कल्पनानुसार ही उनका विपरीत अर्थ करता है, वह गृहीत मिथ्याज्ञानी है। भाई ! अज्ञान को महादुःखकर जानकर अब तो उसका सेवन छोड़ो । यह सुअवसर बार-बार नहीं आता।

अहो ! यह तो सम्यग्ज्ञान सहित वीतरागता का मार्ग है... यही परम हितकर है। 'मंगलमय मंगलकरन वीतराग-विज्ञान' - वीतराग-विज्ञान के बिना जीव का किसी भी प्रकार से हित नहीं होता; अरिहन्तादि इष्ट पद की प्राप्ति जीव को वीतराग-विज्ञान से ही होती है - ऐसे वीतराग-विज्ञान का यथार्थ उपदेश सर्वज्ञदेव की वाणी में और ज्ञानी सन्तों द्वारा रचित शास्त्रों में ही है। कुमति-अज्ञानियों द्वारा रचित कुशास्त्रों में वीतराग-विज्ञान का सच्चा उपदेश नहीं होता, वे तो राग-द्वेष के पोषक हैं। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

निज आत्मा ही उपादेय है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 38 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

जीवादिबहित्तच्चं हेयमुवादेयमप्पणो अप्पा।
कम्मोपाधिसमुब्भवगुणपज्जाएहिं वदिरित्तो ।।३८।।

(हरिगीत)

जीवादि जो बहितत्त्व हैं, वे हेय हैं कर्मोपधिज।
पर्याय से निरपेक्ष आतमराम ही आदेय है।।३८।।

जीवादि बाह्यतत्त्व हेय हैं; कर्मोपाधिजनित गुणपर्यायों से निरपेक्ष आत्मा ही आत्मा को उपादेय है।

(गतांक से आगे...)

यहाँ दृष्टि का विषय बतलाया है। दृष्टि तो निमित्त, पुण्य तथा एकसमय की पर्याय को स्वीकारती ही नहीं। अरे ! वह तो क्षायिकभाव को भी स्वीकार नहीं करती, जो कि परिपूर्ण शुद्धपर्याय है; वह तो एकमात्र पारिणामिकभाव को ही स्वीकारती है। अहो ! मुनिराज ने चारों भावों द्वारा आत्मा को अगोचर कहकर बड़ी अद्‌भुत बात कही है। अनादि-अनन्त यही एक मोक्ष का मार्ग है; क्योंकि 'एक होय त्रयकाल में परमारथ का पंथ' तीनों काल में मोक्ष की रीति एक ही है। इसी मार्ग से अनन्त जीव आज तक मोक्ष गए हैं और भविष्य में भी इसी मार्ग से मोक्ष जायेंगे।

अज्ञानी जीव निश्चय और व्यवहार दोनों को उत्थापित करता है, जबकि ज्ञानी दोनों को यथार्थ स्थापित करता है।

शास्त्र में कथन आता है कि क्षायिकसम्यक्त्व तीर्थंकर अथवा केवली-श्रुतकेवली के समीप होता है। यहाँ अज्ञानी उनसे सम्यक्त्व होना मान लेता है; परन्तु ऐसा नहीं है। यदि उनसे ही सम्यक्त्व होता हो तो उनके समीप बैठे हुए सभी जीवों को हो जाना

चाहिये। पात्र जीव अपने शुद्धचैतन्यस्वभाव के आश्रय से क्षायिकसम्यग्दर्शन प्रकट करता है, तब केवली-श्रुतकेवली की उपस्थिति होती है।

जो जीव उपशमसम्यक्त्व प्रकट करता है, वह पर्याप्तिवाला होता है, संज्ञी पंचेन्द्रिय होता है इत्यादि अनेक प्रकार से कथन शास्त्रों में आता है, वह सब निमित्त का ज्ञान कराने के लिये है। सभी संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों को नहीं होता; किन्तु जो प्रकट करते हैं, वे सभी नियम से संज्ञी ही होते हैं, इसप्रकार निमित्त का ज्ञान कराया है।

जो जीव व्यवहार को ही परमार्थरूप माने बैठे हैं, वे व्यवहार और परमार्थ दोनों का ही लोप करते हैं, जबकि ज्ञानी तो दोनों को ही जैसे है, वैसे स्थापित करते हैं। अपने स्वभाव के आश्रय से सम्यक्त्व प्रकट होता है, यह निश्चय है और उसी समय मौजूद सच्चे देव, गुरु निमित्त हैं, उनका ज्ञान करना व्यवहार है।

जिसके आधार से केवलज्ञानरूपी कार्य प्रकट हो वह कारणपरमात्मा कैसा है?

''कारणपरमात्मा द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्मरूपी उपाधि से जनित विभावगुण पर्याय से रहित है। अनादि-अनन्त अमूर्त्त अतीन्द्रियस्वभाववाला शुद्ध सहज पारिणामिक भाव जिसका स्वभाव है - ऐसा कारणपरमात्मा ही वास्तव में आत्मा है।''

कारणपरमात्मा में ज्ञानावरणादि अष्टकर्मों का अत्यन्त अभाव है। वह दया-दानादि के परिणाम से रहित है, उसमें अशुद्धता या मलिनता नहीं है तथा शरीर, मन, वाणी आदि नोकर्म भी नहीं है। वह विभावगुण-पर्याय से रहित है, उसका न तो आदि है और न अन्त ही; वह तो अनादि-अनन्त एकरूप नित्यस्वभाव है। उसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण नहीं है तथा इन्द्रियों से भी अज्ञात है। उसका स्वभाव परम पवित्र है, नित्य साथ रहनेवाला है। एकरूप सदृशशक्ति जिसका स्वभाव है - ऐसा कारणपरमात्मा है।

द्रव्य शुद्ध, गुण शुद्ध और पर्याय भी शुद्ध है; ऐसा शुद्ध परमपारिणामिकभाव उसका स्वभाव है। जिसप्रकार गुड़ स्वभाववान है और मिठास उसका स्वभाव है; उसीप्रकार कारणपरमात्मा स्वभाववान है और शुद्ध परमपारिणामिकभाव उसका स्वभाव है। ऐसे परमपारिणामिकभाववाला कारणपरमात्मा है। कारणपरमात्मा, शुद्ध

चैतन्यस्वभाव, चिदानन्द भगवान, निरुपाधि स्वभावभाव- ये सब एकार्थवाची हैं। सम्यग्दर्शन एवं द्रव्यदृष्टि का विषय कारणपरमात्मा है; वही वास्तव में आत्मा है और वही उपादेय है अर्थात् उसी का आश्रय सदैव करने योग्य है।

त्रिकाली 'शुद्धभाववाले' कारणपरमात्मा के आधार से 'नियमसार' अर्थात् मोक्षमार्ग प्रकट होता है।

यहाँ कारणपरमात्मा को ही वास्तव में आत्मा कहा है। पुण्य-पाप के भाव को तो आत्मा कहा ही नहीं; उपशम, क्षयोपशम, क्षायिकभाव को भी आत्मा नहीं कहा; क्योंकि वे सभी एक समय की पर्याय हैं। वे भाव व्यवहारनय के विषय हैं और उन पर्यायों से रहित अनादि-अनन्त एकरूप, सदृशशक्तिवाला शुद्धस्वभावकारणपरमात्मा निश्चयनय का विषय है। इस आत्मा को ही श्रद्धा में लेना और अनुभव करना योग्य है। चैतन्य-शक्तिस्वरूप कारणपरमात्मा के आधार से नियमसार अर्थात् मोक्षमार्ग प्रकट होता है। यह शुद्धभाव अधिकार है। त्रिकालीशुद्धभाव के आधार से सम्यग्दर्शन प्रकट होकर, मोक्षमार्ग प्रारम्भ होकर, मोक्षदशा प्राप्त होती है।

निकट मुक्तिगामी जीव को एक त्रिकालीशुद्धस्वभाव ही उपादेय है, दूसरा कुछ भी उपादेय नहीं है।

अतिआसन्न भव्यजीवों को ऐसे निज परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कुछ भी उपादेय नहीं है। शुद्ध परमपारिणामिक स्वभावभावस्वरूप कारणपरमात्मा अथवा शुद्ध चैतन्यस्वभाव अथवा अपने परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कुछ भी उपादेय नहीं है। निमित्त और पुण्य तो अंगीकार करने योग्य है ही नहीं; किन्तु उपशम, क्षयोपशम अथवा क्षायिकभाव भी आदरणीय नहीं है; क्योंकि वे भी एकसमय की पर्याय ही है। मात्र एक ध्रुवस्वभाव ही श्रद्धा में लेने योग्य है। निमित्त, शुभराग की पर्याय, निर्मलपर्याय आदि सभी ज्ञान करने के लिए हैं; किन्तु आदरणीय तो कदापि नहीं। जिसप्रकार गन्ने का ऊपरी और निचला भाग काट देने पर मध्यभाग रस-कसवाला होता है; उसीप्रकार जिसको मोक्ष की रुचि है, जिसकी मुक्ति निकट है - ऐसे मोक्षार्थी जीव को रागरहित अपना एक त्रिकालीशुद्धस्वभाव ही श्रद्धा करने योग्य है। अपने आत्मा का दूसरा कोई अधिष्ठाता नहीं है, इसलिए उसे निजपरमात्मा कहा गया है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आप पर की पर्याय को परद्रव्य कहो; परन्तु स्व की निर्मल पर्याय को भी परद्रव्य क्यों कहते हैं ?

उत्तर : परद्रव्य के लक्ष्य के समान निर्मल पर्याय के लक्ष्य से भी राग होता है; अत: उसे भी परद्रव्य कहा है। वह द्रव्य से सर्वथा भिन्न है, ऐसा जोर दिये बिना दृष्टि का जोर द्रव्य पर नहीं जाता; इसलिए निर्मल पर्याय को भी परद्रव्य, परभाव तथा हेय कहा है। जिसे पर्याय का प्रेम है, उसका लक्ष्य परद्रव्य पर जाता है; इसलिये उसे प्रकारान्तर से परद्रव्य का ही प्रेम है। परम सत्यस्वभाव ऐसे द्रव्यसामान्य के उपर लक्ष्य जाना अलौकिक बात है।

प्रश्न : इस आत्मा का स्वरूप विचार में आने पर भी प्रगट क्यों नहीं होता ?

उत्तर : इसके लिए योग्य पुरुषार्थ चाहिए। अन्दर में अपार शक्ति पड़ी है, उसका माहात्म्य आना चाहिए। वस्तु तो प्रगट है ही, पर्याय की अपेक्षा से उसे अप्रगट कहा जाता है। वस्तु कहीं आवरण से आच्छादित नहीं है। हाँ, प्रथम वस्तु का माहात्म्य आवे; परन्तु ऐसा है नहीं। सर्वप्रथम माहात्म्य आना चाहिए, पश्चात् माहात्म्य आते-आते भान हो जाता है।

प्रश्न : आत्मा के भिन्न-भिन्न गुण ध्यान में आते हैं, फिर भी अभेद ध्यान में क्यों नहीं आता ?

उत्तर : स्वयं ध्यान में लेता नहीं; इसलिए नहीं आता। अभेद को लक्ष्य में लेना तो अन्तिम स्थिति है। निर्विकल्प होने पर ही अभेद आत्मा लक्ष्य में आता है।

प्रश्न : उसे लक्ष में लेना कठिन पड़ता है ?

उत्तर : प्रयत्न करो ! घबड़ाने जैसी बात नहीं है। अभेद आत्मा अनुभव में आ सकने योग्य है; इसलिए धीरे-धीरे प्रयास करना, निराश मत होना। ऐसे काल में ऐसी उँची बात सुनने को मिली है- यही क्या कम है ?

प्रश्न : सम्यग्दर्शन होने से पहले किसप्रकार के विचार होते हैं कि जिनका अभाव करके सम्यग्दर्शन होता है ?

उत्तर : किसप्रकार के विचार चलते हैं, इसका कोई नियम नहीं है। तत्त्व के किसी भी प्रकार के विचार हो सकते हैं, जिनका अभाव करके सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है।

ऊभेगांव, हिंगोली, वासिम, जबलपुर, खामगाँव, शिरपुर, अकोला एवं कारंजा में भी डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती के भव्य आयोजन हो चुके हैं, स्थानाभाव के कारण इनके समाचार इस अंक में प्रकाशित करना संभव नहीं हो पा रहा है, आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

समाचार दर्शन -

● सागर में बृहत्स्तर पर हीरक जयन्ती का आयोजन -

सागर में दिनांक 12 से 14 मार्च तक तीन दिवसीय प्रवास के दौरान श्री शांतिनाथ जिनालय **मकरोनिया** में डॉ. भारिल्ल के **ज्ञान समुच्चयसार** पर, महावीर जिनालय **परकोटा** में समयसार के **15वें कलश** पर एवं **तारण-तरण चैत्यालय** में **ज्ञान समुच्चयसार** पर मार्मिक प्रवचन हुये।

14 मार्च को विजय टाकीज परिसर, मधुबन पैलेस में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह मुमुक्षु मण्डल, सकल दि. जैन समाज एवं तारण समाज के तत्त्वावधान में विशाल स्तर पर आयोजित किया गया। इससे पूर्व डॉ. भारिल्ल का **णमोकार महामंत्र** पर प्रवचन हुआ।

इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्रीमंत सेठ श्री माणिकचंदजी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमंत सेठ श्री धर्मेन्द्रकुमारजी (खुरई) उपस्थित थे। अन्य अतिथियों में श्रीमती सुधा जैन (पूर्व विधायक), श्री प्रकाशचन्द्रजी (माणकचौक), श्री कृष्णचंदजी जैन (लाल दुकान), श्री पद्मचंदजी (मगरधा वाले), श्री नेमीचंदजी विनम्र, श्री गुलाबचंदजी सेठ (सुभाष ट्रांसपोर्ट), श्रीमंत सेठ अशोकजी जैन, इंजीनियर ए.के.जैन भोपाल एवं श्री राजकुमारजी (कर्रापुर) मंचासीन थे।

इस अवसर पर अ.भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा मकरोनिया, गोराबाई ट्रस्ट सागर, जैन युवा फैडरेशन शाखा परकोटा मंदिर, तारण-तरण समाज, अखिल भारतीय गोलापूर्व समाज (श्री सुभाषजी चौधरी, श्री अशोकजी सेठ, श्री मनोजजी बंगेला) एवं परवार समाज के प्रतिनिधियों ने डॉ. भारिल्ल का शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति, तिलक एवं माल्यार्पण द्वारा सम्मान किया।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. भारिल्ल के करकमलों से गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचनों की डी.वी.डी. का विमोचन तथा टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पं. विपुलजी मोदी द्वारा संपादित **सागर सरताज** पत्रिका के 'डॉ. भारिल्ल हीरकजयंती विशेषांक' का विमोचन हुआ।

समारोह के अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि हीरक जयंती का तत्त्व की प्रभावना में बहुत बड़ा योगदान है; कार्यक्रम में तत्त्वप्रचार की ही मुख्यता है, जन्मदिन तो निमित्तमात्र है। इसके पश्चात् पण्डित रूपचंदजी बंडा, पण्डित शिखरचंदजी, पण्डित अखिलेशजी शास्त्री, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री, पण्डित निर्मलजी एवं कु.सीमा जैन ने डॉ. भारिल्ल द्वारा देश-विदेश में किये गये अभूतपूर्व योगदान संबंधी अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये।

अभिनंदन समिति में अध्यक्ष श्रीमंत सेठ श्री डालचंदजी जैन (पूर्व सांसद), संयोजक श्री दिनेशजी एडवोकेट, श्री गुलजारीलालजी जैन, श्री प्रमोदजी जैन, पं.अरुणजी मोदी, श्री संतोषजी जैन (नीमवाले), श्री आदित्यजी जैन, श्री सुधीरजी सहयोगी एवं श्री मुकेशजी समैया प्रमुख थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित अरुणकुमारजी मोदी ने किया।

● निसईजी (म.प्र.) में तीन दिवसीय कार्यक्रम -

अतिशय क्षेत्र निसईजी में दिनाँक 9 से 11 मार्च तक अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के व्याख्यान एवं हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन डॉ. भारिल्ल द्वारा श्री तारणस्वामी विरचित ज्ञानसमुच्चयसार की गाथा 75 से 81 के आधार से शुद्धात्मा का स्वरूप, परिणामों की निर्मलता, कार्य-कारण संबंध, ध्यान का स्वरूप जैसे गूढ-गंभीर विषयों पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

आपके अतिरिक्त पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर, ब्र. वसंतजी, ब्र. आत्मानंदजी व पं. अभिषेकजी मंगलायतन के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 11 मार्च को प्रवचनोपरान्त हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में श्रीमंत सेठ श्री डालचंदजी जैन सागर (पूर्व सांसद), सिंघई ज्ञानचंदजी बीना (महामंत्री-अखिल भारतीय तारण समाज), श्रीमंत सेठ श्री प्रेमचंदजी सागर (अध्यक्ष-निसईजी ट्रस्ट), श्री राजेन्द्रजी सुमन सिंगोड़ी (संपादक-संत श्री तारण ज्योति), श्री संतोषजी समैया (मेला अध्यक्ष), श्री रतनचंदजी नियम गंजबासौदा (तीर्थक्षेत्र मंत्री), श्री तारण-तरण संघ के त्यागी व्रती महानुभाव, श्री नीलेशकुमारजी सुहागपुर एवं पण्डित रतनचंदजी होशंगाबाद उपस्थित थे।

इस प्रसंग पर अ.भा.तारण समाज, तारण-तरण तीर्थक्षेत्र निसईजी ट्रस्ट, अ.भा.तारण-तरण युवा परिषद एवं तारण-तरण विद्वत् परिषद ने डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया। साथ ही विदिशा, दहेगाँव, होशंगाबाद, खुरई, सिंगोड़ी आदि स्थानों से पधारे सैंकड़ों साधर्मियों ने शॉल, श्रीफल एवं सम्मानपत्र प्रदानकर सम्मान किया। संचालन डॉ. विद्यानंदजी जैन विदिशा ने किया।

● दलपतपुर में हीरक जयन्ती समारोह -

दलपतपुर-सागर में दिनाँक 15 मार्च को मुमुक्षु मण्डल एवं सकल समाज दलपतपुर के तत्त्वावधान में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दामोदरजी जैन शाहगढ (अध्यक्ष-सिद्धक्षेत्र नैनागिरि) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री गुलाबचंदजी (गोलन) उपस्थित थे। मंचासीन अतिथियों में श्री सिंघई कन्हैयालालजी, श्री कपूरचंदजी, श्री मोतीलालजी संधेलिया, श्री लक्ष्मीचंदजी लोहिया, श्री फूलचंदजी मोदी, पण्डित अजयजी जैन, श्री पंचमलालजी चांदर (सरपंच), श्री गणेशजी महाराज, बाबू एच.एन.गोस्वामी एवं श्री कोमलसिंहजी उपस्थित थे।

इस अवसर पर अ.भा. जैन युवा फैडरेशन, मुमुक्षु मण्डल, सकल समाज दलपतपुर एवं मुमुक्षु मण्डल बण्डा ने डॉ. भारिल्ल का तिलक, माल्यार्पण तथा शॉल-श्रीफल द्वारा सम्मान किया।

इस अवसर पर श्री विनोदजी मोदी, श्री महेन्द्रजी चौधरी, श्री निखलेशजी शास्त्री ने डॉ. भारिल्ल के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह सम्मान मेरा नहीं; अपितु जिनवाणी एवं गुरुदेवश्री का सम्मान है।

समारोह में श्री राजेशजी दिवाकर, श्री वैभवजी मोदी, श्री सुपेन्द्रजी मोदी, श्री पुष्पेन्द्रजी चौधरी, श्री रमेशजी दिवाकर, श्री अरविन्दजी लोहिया, शैलु लोहिया, श्री संतोषजी चौधरी एवं श्री सुनीलजी मोदी का महत्वपूर्ण योगदान था। संचालन पं. अरुणजी मोदी ने किया। सभा के पूर्व डॉ. भारिल्ल के **अहिंसा** विषय पर मार्मिक प्रवचन ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

● गौरझामर के लिये ऐतिहासिक उपलब्धि -

गौरझामर-सागर में दिनाँक 13 मार्च को जैन युवा फैडरेशन द्वारा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन एवं हीरक जयंती का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के **आत्मा-परमात्मा** विषय पर प्रवचन का लाभ मिला। प्रवचनोपरान्त सभा हीरक जयन्ती समारोह में बदल गई। सभा की अध्यक्षता क्षेत्रीय पूर्व विधायक श्री सुनीलजी जैन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री राजकुमारजी ठाकुर बरकोरी (पूर्व जिला उपाध्यक्ष) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सकल दि. जैन समाज के पूर्व अध्यक्ष श्री जीवनलालजी धुरा एवं समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री मुलायमचंदजी चौधरी गुगवारा आदि मंचासीन थे।

इस अवसर पर श्री विनयजी जैन (प्राचार्य-शासकीय हाईस्कूल), श्री वसंतजी मिठिया (अध्यक्ष-महावीर जिनालय), श्री कोमलसिंहजी लोधी (ग्राम के जनपद सदस्य), श्री किशनजी खटीक (ग्राम सरपंच प्रतिनिधि), श्री अयोध्याप्रसादजी तिवारी (ग्राम थाना प्रभारी), श्री जगदीशजी श्रीवास्तव (सेवानिवृत्त शिक्षक), श्री कैलाशजी जैन (पूर्व सरपंच), श्री कुन्दनलालजी चौरसिया (पत्रकार), श्री सनतजी जैन आदि महानुभाव सभा में उपस्थित थे।

सभी लोगों ने डॉ. भारिल्ल का शॉल एवं माल्यार्पण से स्वागत किया। अनेकों पदाधिकारियों ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान कर अपने को गौरवान्वित महसूस किया। छोटे से गाँव में डॉ. भारिल्ल का पहुँचना, प्रवचन एवं हीरक जयन्ती समारोह मनाया जाना गौरझामर जैसे लघु ग्राम के लिये एक ऐतिहासिक उपलब्धि रही। संचालन श्री अरुणजी शास्त्री मकरोनिया तथा आभार प्रदर्शन मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री सुधीरजी जैन ने किया। **-निहाल जैन**

● सिलवानी में प्रवचन एवं हीरक जयन्ती -

सिलवानी-रायसेन में दिनाँक 12 मार्च को श्री तारण-तरण दि.जैन चैत्यालय में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

रात्रि 7 बजे प्राचार्य प्रजा सेवकजी के निवास से बडी धूम-धाम एवं गाजे-बाजे के साथ डॉ. भारिल्ल को समारोह स्थल तारण-तरण चैत्यालय लाया गया। रास्ते में जगह-जगह समाज के लोगों ने माला, शॉल एवं श्रीफल से आपका स्वागत किया। समारोह स्थल पर स्वाध्याय मण्डल सिलवानी,पार्श्वनाथ जैन मंदिर समिति, बेगमगंज मुमुक्षु मण्डल, शोभापुर जैन समाज की ओर से श्री महेशजी जैन, तारण-तरण पाठशाला की ओर से श्रीमती सुषमा जैन एवं मा. जयकुमारजी समैया, तारण-तरण दि.जैन समाज की ओर से मंत्री श्री अशोकजी जैन मल्लूभाई एवं अध्यक्ष श्री ऋषभजी जैन आदि ने डॉ. भारिल्ल का विशेष सम्मान किया। इनके अतिरिक्त श्री शिखरचंदजी जैन, श्री संजयजी समैया एवं पण्डित श्रवणकुमारजी जैन ने भी व्यक्तिगतरूप से सम्मान किया।

कार्यक्रम के पूर्व डॉ. भारिल्ल के **णमोकार महामंत्र** के महत्व पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। संपूर्ण जैन समाज ने डॉ. भारिल्ल द्वारा किये गये तत्त्वप्रचार की बहुत प्रशंसा की। संचालन पं.समकितजी शास्त्री एवं मंगलाचरण श्री संजयजी समैया ने किया। **- जयकुमार जैन शिक्षक**

● दमोह में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती

दमोह (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 17 व 18 मार्च को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया। दिनांक 18 मार्च को तारण-तरण चैत्यालय के सामने बने विशाल पंडाल में आयोजित समारोह की अध्यक्षता श्री विमलकुमारजी लहरी ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में नगरपालिका अध्यक्ष श्री मनुजी मिश्रा उपस्थित थे।

इस अवसर पर तारण तरण समाज की ओर से श्री सुनीलजी प्रधान, मुमुक्षु मण्डल की ओर से श्री पदमकुमारजी अभाना एवं श्री विनोदकुमारजी अभाना ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

मुख्य अतिथि श्री मनुजी मिश्रा ने अपने वक्तव्य में डॉ. भारिल्ल के **अहिंसा** पर हुये प्रवचन की प्रशंसा करते हुये कहा कि 'वचन एवं काय की हिंसा तो सभी रोक लेते हैं; परन्तु मन की हिंसा को रोकने का कार्य धर्म का है, यह बात मैंने जीवन में पहली बार सुनी है, मेरे लिये यह नयी दृष्टि है।'

ज्ञातव्य है कि दमोह में डॉ. भारिल्ल के तीन प्रवचनों का लाभ मिला। सेठ मंदिर में ग्रंथाधिराज समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर एवं णमोकार महामंत्र पर प्रवचनों का लाभ मिला तथा तारण-तरण दि.जैन चैत्यालय के सामने बने पंडाल में अहिंसा विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

● बण्डा में डॉ. भारिल्ल का उद्बोधन

बण्डा (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 15 मार्च को प्रात: कुन्दकुन्दकहान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के संक्षिप्त उद्बोधन का लाभ प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के संक्षिप्त प्रवचन के पश्चात् हुये कार्यक्रम में समाज के अध्यक्ष श्री देवेन्द्रकुमारजी भाईजी, मंत्री श्री राजकुमारजी एवं स्थानीय विद्वान पण्डित रूपचंदजी की उपस्थिति रही। समयाभाव के कारण सभी महानुभावों ने दलपतपुर जाकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। सम्मान समारोह में समाज के सभी लोगों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया एवं डॉ. भारिल्ल द्वारा किये गये तत्त्वप्रचार के कार्यों की बहुत प्रशंसा की।

लूणदा में हीरक जयन्ती

लूणदा-उदयपुर (राज.) : पूरे देश में चल रहे हीरक जयन्ती समारोह के उत्साह की लहर लूणदा को भी छूकर निकल गई...डॉ. भारिल्ल के तूफानी दौरे में विविध कार्यक्रमों की व्यस्तता के मध्य दिनाँक 25 मार्च को लूणदा वासियों को भी मिला डॉ.भारिल्ल की हीरक जयंती मनाने का अवसर...।

इस अवसर पर शाश्वत चेरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री चाँदमलजी कीकावत, श्री ललितजी कीकावत, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाडा, श्री सुमतिलालजी बाँसवाड़ा, श्री अंकितजी जैन, श्री रजनीशजी जैन आदि ने डॉ. भारिल्ल का प्रतीक चिह्न, प्रशस्ती, शॉल आदि भेंट कर भावभीना अभिनन्दन किया। आयोजन में गाँव के जैन-अजैन अनेक लोगों ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान करके अपने को गौरवान्वित महसूस किया। इस प्रसंग पर कूण, कानोड़, बोहेड़ा आदि गाँवों के लोगों ने भी लूणदा आकर डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया। सम्मान समारोह के पूर्व डॉ. भारिल्ल के **अहिंसा** विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ उपस्थित जन समुदाय को मिला।

संचालन पं. अंकितजी शास्त्री तथा आभार प्रदर्शन पं.जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि में विद्वत गोष्ठी संपन्न

मुक्तागिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 31 मार्च से 4 अप्रैल तक द्वितीय विद्वत् गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त ब्र. हेमचंदजी देवलाली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, श्री भरतभाई शेठ राजकोट, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, श्री हितेशभाई चौवटिया मुम्बई, पण्डित ऋषभजी जैन इन्दौर, पण्डित सुदीपजी बीना ने निर्धारित विषयों पर गहन चर्चा की। गोष्ठी का मुख्य विषय स्व-पर प्रकाशक था।

इस गोष्ठी में श्री अनंतराय ए.शेठ मुम्बई, श्री सुमनभाई दोशी, ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, ब्र. बसंतभाई दोशी, श्री रमेशजी भंडारी बैंगलोर विशेष रूप से उपस्थित थे। इस गोष्ठी में तत्त्वप्रचार के लिये नवीन प्रयासों और ठोस योजनाओं पर भी चर्चा की गई। श्री अनंतराय ए. शेठ ने गोष्ठी के प्रारूप की सराहना करते हुये निरंतर ऐसे आयोजनों को करने के लिये संकल्प व्यक्त किया। डॉ. भारिल्ल ने वीतरागी तत्त्व के प्रचार-प्रसार के लिये सहर्ष सदैव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

इस गोष्ठी में लगभग 100 विशिष्ट अतिथियों एवं साधर्मियों ने 32 विद्वानों का लाभ लिया। उपस्थित विद्वानों एवं श्रोताओं को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का विशेष मार्गदर्शन मिला।

(पृष्ठ १८ का शेष..) मुमुक्षु मण्डल छिंदवाड़ा के अतिरिक्त सिंगोड़ी से पं. देवेन्द्रजी, उभेगाँव से श्री शेषकुमारजी, कच्छीबीसा समाज से श्री प्रफुल्लभाई शाह, नागपुर मुमुक्षु मण्डल से डॉ. राकेशजी शास्त्री, प्रेस क्लब छिंदवाड़ा से श्री रत्नेशजी जैन आदि ने भी डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया। श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का स्वागत श्रीमती कुसुमलता पाटनी एवं श्रीमती सुशीला सिंघई ने किया।

कार्यक्रम में श्री रत्नेशजी जैन (अध्यक्ष-प्रेस क्लब, छिंदवाड़ा), डॉ. राकेशजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़, पण्डित अशोकजी शास्त्री नागपुर, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी सिंगोड़ी, श्री अशोकजी वैभव, श्री शांतिकुमारजी पाटनी आदि की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

कार्यक्रम के अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में कहा कि यह सम्मान जैनदर्शन में वर्णित उन तत्त्वों का सम्मान है, जिनके माध्यम से नर से नारायण बना जा सकता है।

जिला कलेक्टर महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. भारिल्ल की प्रयोगधर्मिता की प्रशंसा करते हुये कहा कि सत्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिये व्यावहारिक दृष्टिकोण आवश्यक है। जब तक प्रयोग के माध्यम से हम अपने विचारों को अभिव्यक्त नहीं करेंगे, स्वयं का चिंतन जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत नहीं करेंगे, तब तक धर्म को जनसामान्य के मध्य सम्प्रेषित नहीं किया जा सकता; ऐसी प्रयोगधर्मिता डॉ. भारिल्ल में देखी जा सकती है।

इस अवसर पर आयोजित सभा का सफल संचालन डॉ. महेशजी जैन (उपसंचालक - लोकशिक्षण म.प्र. शासन भोपाल) ने किया। दोनों दिन डॉ. भारिल्ल के प्रवचन के पूर्व पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़ के ग्रंथाधिराज समयसार पर प्रवचन का लाभ मिला।

दिनाँक 5 अप्रैल को डॉ. भारिल्ल के सान्निध्य में ऐतिहासिक पत्रकार वार्ता का भी आयोजन रखा गया। लगभग डेढ से दो घण्टे चली इस प्रेसवार्ता में पत्रकारों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का डॉ. भारिल्ल ने बहुत तार्किक ढंग से समाधान किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में मुमुक्षु मण्डल एवं युवा फैडरेशन के सदस्यों का भरपूर सहयोग रहा। आयोजन के माध्यम से डॉ. भारिल्ल के 215 घण्टों के 800 डी.वी.डी. अर्थात् 1 लाख 72 हजार घण्टों के प्रवचन घर-घर पहुँचे। ●

(पृष्ठ १५ का शेष... उदयपुर समाचार)

अतिथियों के स्वागत में अपने विचार व्यक्त करते हुये फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी जिनेन्द्रजी शास्त्री ने कहा कि 'जब गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने टोडरमल स्मारक खोलने के कारण श्री पूरनचंदजी गोदीका का अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक बैण्ड बाजे के साथ स्वागत कराया था, गोदीकाजी की प्रतीक्षा में प्रवचन भी देर से प्रारंभ किया था, तो जिसने स्मारक में 550 विद्वान तैयार किये हैं, ऐसे डॉ. भारिल्ल का सम्मान क्यों नहीं किया जाए।'

इस अवसर पर पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, डॉ. महावीरप्रसादजी जैन, महिला फैडरेशन की अध्यक्ष श्रीमती किरण जैन एवं मंचासीन अतिथियों ने डॉ. भारिल्ल को 11 किलो की माला पहनाई एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया। प्रशस्ति-पत्र का वाचन श्रीमती किरण जैन ने किया।

समारोह में मुख्यरूप से श्री आई.वी.त्रिवेदी (डीन, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय), श्री के.सी. बोल्या, श्री ताराचंदजी जैन, श्री कुन्दनलालजी सामर, श्री तेजसिंहजी बोल्या, डॉ. शैलेन्द्रजी हिरण, श्री प्रमोदजी सामर, श्री कन्हैयालालजी दलावत, श्री राजमलजी जैन गोदणोत, श्री कचरुलालजी मेहता, श्री सुजानमलजी गदिया, श्री उदयलालजी भूतालिया, महंत महावीरजी चित्तौड़ा, श्री किरणचंद्रजी लसोड, सेठ श्री शांतिलालजी नागदा, श्री फतहलालजी नागदा, श्री बी.एल. थाया, श्री हीरालालजी अखावत, श्री रंगलालजी बोहरा, श्री लक्ष्मीलालजी बण्डी, ठाकुर संग्रामसिंहजी चुण्डावत, श्री विनोदजी भोजावत, श्री हीरालालजी सिंघवी, श्री भागचंदजी कालिका, श्री दीपचंदजी गांधी, श्री मोहनलालजी वालावत, श्री रमेशजी वालावत, श्री शांतिलालजी अखावत, श्री शशिकांतजी शाह, श्री विमलजी रठौड़िया, पण्डित अंकितजी जैन, पण्डित गजेन्द्रजी जैन, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री, पण्डित धूलचंदजी नागदा, श्री जीतमलजी संगावत आदि अनेक विशिष्ट महानुभावों ने डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया।

इसके अतिरिक्त कुन्दकुन्द कहान वीतराग विज्ञान शिक्षण समिति, तेरापंथ श्वेताम्बर सभा, जैन श्वेताम्बर महासभा, मूर्तिपूजक श्री संघ, महावीर युवा मंच, वीतराग विज्ञान प्रचार प्रसार ट्रस्ट, चन्द्रप्रभ दि.जिन चैत्यालय मुमुक्षु मण्डल, चन्द्रप्रभ दि.जैन मंदिर गायरियावास, दिगम्बर जैन समाज उदयपुर, आदिनाथ दि.जैन मंदिर केशवनगर, शांतिनाथ दि.जैन मंदिर नेमीनगर, आदिनाथ दि.जैन मंदिर सेक्टर-11, चंद्रप्रभ दि.जैन मंदिर, बीसा नरसिंहपुरा तेरापंथ समाज, दसा नरसिंहपुरा समाज, हुमड़ समाज, चेम्बर ऑफ कॉमर्स, गोगुन्दा मित्र मण्डल आदि अनेक संस्थाओं की ओर से डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया गया।

कार्यक्रम में सेमारी, लकड़वास, चावण्ड, टोकर, लूणदा, भिण्डर, जगत, साकरोदा, डबोक, कोल्यारी, खाखड़, झाडोल, फलासिया, नाई, सागवाड़ा, सीमलवाड़ा, कल्याणपुर, आसपुर, केसरियाजी, खेरवाड़ा, ओड़ा, थोबावाड़ा, ओगणा, पड़ावली, गोगुन्दा, ईसवाल, खमनोर, बिच्छीवाड़ा, मगवास, बाघपुरा, मादड़ी, चित्तौड़, मंगलवाड़, चिकारडा, डूंगला, भादसोडा, बड़ीसादड़ी, छोटीसादड़ी, प्रतापगढ, जावद, मनासा आदि लगभग 53 गाँवों के लोगों ने पधारकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

समारोह के अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि हीरक जयन्ती समारोह में मेरा नहीं; अपितु जिनवाणी का सम्मान हो रहा है, इस माध्यम से समाज अहिंसा व व्यसन मुक्ति की ओर

अग्रसर हो रही है। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर मार्मिक व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम का संचालन श्री आलोकजी पगारिया ने किया तथा आभार प्रदर्शन जिला प्रभारी पण्डित खेमचंदजी जैन ने किया।

● भिण्डर-उदयपुर में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती -

यहाँ दिनाँक 26 मार्च को प्रात: अ.भा.जैन युवा फैडरेशन एवं पार्श्वनाथ दि.जैन मुमुक्षु मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती मधु मेहता (उदयपुर जिला प्रमुख) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो.आई.वी. त्रिवेदी (डीन, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय) उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में युवा फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, श्री कन्हैयालालजी दलावत एवं श्री चंद्रशेखरजी सुथार (प्रधान-पंचायत समिति) मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल का परिचय श्री आदेश्वरलालजी सिंघवी ने कविता के माध्यम से दिया। तत्पश्चात् सकल जैन समाज द्वारा मेवाड़ी साफा, माला एवं शॉल ओढ़ाकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया। डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन भिण्डर की सकल जैन समाज ने ही नहीं; अपितु जैनेतर समाज के 12 प्रतिनिधियों एवं आस-पास के 9 गाँवों के प्रतिनिधियों ने भी किया। इसी क्रम में श्री सूरजमलजी फान्दोत, श्री निर्मलकुमारजी लिखमावत एवं श्री सुनीलजी वक्तावत द्वारा डॉ. भारिल्ल को प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन व संयोजन पण्डित खेमचंदजी शास्त्री एवं पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री ने किया। समारोह से पूर्व डॉ. भारिल्ल के **णमोकार महामंत्र** पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला।

(पृष्ठ १८ का शेष... नागपुर समाचार)

तदुपरांत डॉ.भारिल्ल की सम्मान श्रंखला को आयोजित करते हुए नागपुर एवं आसपास की लगभग ४२ प्रमुख संस्थाओं ने शॉल, श्रीफल, तिलक, माल्यार्पण करके व प्रशस्ति-पत्र प्रदानकर सम्मान किया, जिनमें जैन सेवा मण्डल, श्री दि.जैन महासमिति, श्री कुन्दकुन्द दि.जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट काटोल, श्री वासुपूज्य दि.जैन चैत्यालय प्रतापनगर, श्री तारण-तरण दि.जैन चैत्यालय नागपुर एवं रामटेक, श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल कारंजा, श्री श्रीमती कुंकुबाई जैन श्राविकाश्रम कारंजा, श्री महावीर ज्ञानोपासना समिति कारंजा, शची सखी मण्डल, श्री सैतवाल जैन संगठन मण्डल महावीर नगर, श्री सन्मति जैन ट्रस्ट फण्ड, श्री महाराष्ट्र तत्त्वप्रचार-प्रसार समिति, श्री परमानंद दि. जैन धर्मशाला, जैन क्लब, जैन सोशल ग्रुप, भारतीय जैन संघटना, महावीर इन्टरनेशनल, ज्वाईंट जैन ग्रुप, श्री ओसवाल पंचायती संस्था इतवारी, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा, विदर्भ सेवा समिति, जैन इन्टरनेशनल ट्रेड आर्गेनाइजेशन, लायन्स क्लब, रोटरी क्लब आदि प्रमुख थे।

नागपुर मण्डल की ओर से प्रदान किये गये विशेष प्रशस्ति-पत्र का वाचन अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के उपाध्यक्ष श्री प्रियदर्शनजी जैन ने किया।

सम्मानोपरांत प्रमुख अतिथि न्यायमूर्ति श्री श्रीषेणजी डोणगांवकर एवं श्री राकेशजी जैन का

उद्बोधन हुआ, जिसमें उन्होंने डॉ. भारिल्ल के कार्य की महती प्रशंसा करते हुए कहा कि 'डॉ. भारिल्ल ने अपनी वाणी, लेखनी एवं साहित्य द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि तत्त्वज्ञान की कठिन से कठिन बात को भी वे अत्यंत सहज ढंग से लोगों के हृदय में उतार सकते हैं, इसके लिये उनका जितना भी सम्मान किया जाए, वह सागर में बूंद के समान है।'

इसके पश्चात् कार्यक्रम के अध्यक्ष **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख सरसंघसंचालक डॉ. मोहनजी भागवत** ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'डॉ. भारिल्ल जैसी महान हस्तियों का सम्मान होता है, तो ऐसे सम्मान से सम्मानित वह समाज होती है, जो ऐसे सम्मान को व्यक्त करती है। आज डॉ. भारिल्ल ने चरमोत्कर्ष स्थिति को प्राप्त किया है; ऐसे शिखर पर विराजमान होने के बाद भी उसका अहंभाव रंचमात्र भी उनमें दिखाई नहीं देता। कुछ लोग थोड़े से सम्मान से फूले नहीं समाते; किन्तु डॉ. भारिल्ल का इतना सम्मान होने पर भी उनका सहज व्यक्तित्व इस सम्मान से कई गुना आगे है। उन्होंने कहा कि व्याकरण आदि में उलझाने वाले पण्डित तो बहुत देखे हैं; परन्तु णमोकार मंत्र जैसे विषय पर इतनी सरल भाषा में अधिकृत जानकारी, अधिकृत वक्ता से सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। अन्त में दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन की कामना करते हुये उनकी ज्ञानाराधना की प्रशंसा की।'

इस प्रसंग पर डॉ. भारिल्ल के समक्ष उनके विद्यार्थियों पण्डित विपिनजी शास्त्री, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री सातपुते, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री सिंगोड़ी, पण्डित धवलजी गांधी, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन, पण्डित पंकजजी दहातोंडे ने प्रतिज्ञा की कि डॉ. भारिल्ल से आशीर्वाद ग्रहण करते हुये हम सभी उनके समान जीवन की अन्तिम सांस तक जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहेंगे।

इस अवसर पर श्री मोहनजी भागवत द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुये सकल दि.जैन समाज ने डॉ. भारिल्ल को **'श्रुतसंवर्धक'** की उपाधि से अलंकृत किया। इसी क्रम में सौ. प्रेमलता मोदी एवं विद्याबाई जैन ने तिलक लगाकर, डॉ. शकुन जैन ने माल्यार्पण करके एवं सौ. सुनीता जैन ने श्रीफल प्रदान कर श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का स्वागत किया।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों की प्रशंसा करते हुये कोलारस से प्रारंभ हुए इस उत्सव की घटना के अनेक संस्मरण सुनाते हुये कहा कि यह मेरा सम्मान नहीं; अपितु जिनवाणी का सम्मान है।

दिनाँक ७ अप्रैल को श्रमिक पत्रकार संघ द्वारा आयोजित 'मीट द प्रेस' कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल का लगभग ४० पत्रकारों ने सामाजिक, राजनैतिक, व्यावसायिक एवं वर्तमान गतिविधियों पर इन्टरव्यू लिया, जिसमें डॉ. भारिल्ल ने सभी प्रश्नों का सटीक एवं सुदृढ समाधान किया।

कार्यक्रम का संचालन युवा फैडरेशन के अध्यक्ष पण्डित विपिनजी शास्त्री ने किया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

25 अप्रैल	बांसवाडा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
25 अप्रैल (सायं)	रतलाम	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
9 मई	औरंगाबाद	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
11 मई से 2 जून	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर एवं हीरक जयंती समापन समारोह